मिथिला में ज्योतिष

पं० बलदेव मिश्र, ज्योतिषाचार्य

मिथिला याज्ञिक देश है। कवि भवभूति ने उत्तर रामचरित में "अयि देवयजन संभवे" सीताजी को कहा है तथा एक प्राचीन पण्डित ने मजनवसुमती सास्ति मे तीरभुक्तिः—ऐसा कहा है। याज्ञवल्क्यस्मृति में लिखा है "सज्ञेयो याज्ञिको देशो" इससे मिथिला यज्ञ देश है। यज्ञ पर्वादि में होता है, पर्व का ज्ञान पञ्चाङ्ग से होता है अतएव पञ्चाङ्ग का निर्माण बहुत प्राचीन समय से मिथिला देश में होता रहा है। पञ्चाङ्ग बनाने में सौविध्य हो इसलिये सूर्यसिद्धान्त को आधारमान कर मकरन्द मिश्र ने पञ्चदश शताब्द में अपनी प्रसिद्ध मकरन्दसारणी बनाई। इसी सारणी के अनुसार इतने दिनो से न केवल मिथिला में किन्तु समस्त उत्तरभारत में पञ्चाङ्ग बनता आ रहा है। उन्होंने इस सारणी की रचना वाराणसी में की ऐसा उन्होंने स्पष्ट ही लिखा है—

> "श्रीसूर्यसिद्धान्तमतेन सम्यक् विश्वोपकाराय गुरुप्रसादात्।
> तिथ्यादिपत्रं वितनोति काश्यामानन्दकन्दो मकरन्दनामा"॥

इस मकरन्द पर दिवाकरभट्ट की टीका तो प्रसिद्ध है छपी हुई है किन्तु दो और टीकायें लेखक के देखने में आई हैं एक का लेखक गोकुलनाथ है। ये दोनों टीकायें वाराणसी के सरस्वती भवन पुस्तकालय में सुरक्षित है तथा ये दोनों टीकायें स्वर्गीय ज्योतिषाचार्य पं० बबुआजी मिश्र के पुस्तक संग्रह में है ऐसा स्वयं पण्डितजी ने लेखक से कहा था।

महामहोपाध्याय शङ्कर मिश्र ने पञ्चदशवीं शताब्दी में अपने वैशेषिक सूत्रोपस्कार में एक स्थान में लिखा है कि ज्योतिषओं से कहा हुआ ग्रहण कभी मिलता है कभी नहीं भी मिलता, इससे स्पष्ट है कि उनके समय में ग्रहण का गणित किया जाता था। महामहोपाध्याय महेश ठाकुर ने अपने अतीचारनिर्णय ग्रन्थ में सूर्यसिद्धान्तीय गणित को लिखा है। दरभङ्गा स्टेट के राजा हेमाङ्गद ठाकुर ने राहूपरागपञ्जी नाम की एक पुस्तक लिखी जिसमें अनेक सौ वर्षों के भविष्य चन्द्रसूर्यग्रहण लिखे हुए हैं। इससे मिथिला में पञ्चाङ्ग बनना स्पष्ट है।

नेपालराज्य के पुस्तकालय में चण्डेश्वर की टीका सूर्यसिद्धान्त पर मिली है जिस टीका का नाम अमला है। यह चण्डेश्वर मैथिल हैं। संभवतः प्रसिद्ध राजमन्त्री

सात रत्नाकर के लेखक चण्डेश्वर ठाकुरही इसके लेखक हों। इधर उन्नीसवीं शताब्दी में पटना नित्रासी नीलाम्बर झा से ज्योतिष सिद्धान्त गणित की चर्चा मिथिला में विशेष रूप से हुई है। इनके बड़े भाई का नाम जीवनाथझा था। जीवनाथझा बड़े गणितज्ञ कर्मकाण्डी तथा फलितज्ञ ज्योतिषी हो गये हैं। भास्कराचार्य के बीजगणित पर इनकी बड़ी अच्छी टीका है। उसका मुद्रण भी दो बार हुआ है। फलित में भावप्रकाश नामक पुस्तक मुद्रित है। कर्मकाण्ड में वास्तुरत्नावली तथा जन्मपत्रिकाविधान ये सब पुस्तकें उनकी सर्व प्राप्य हैं। पं० नीलाम्बर झा अलवर महाराज की सभा को सुशोभित करते थे। उनकी पुस्तक गोलप्रकाश नाम की अपूर्व है। सर्वत्र संस्कृत परीक्षाओं में स्वीकृत है। वे बड़े विलक्षण विद्वान हो गये हैं। ये महामहोपाध्याय बापूदेवशास्त्री के समसामायिक तथा उनके मित्र थे। इनके गोलप्रकाश का संशोधन तथा संपादन शास्त्रीजी ने ही किया था। पहले म०म० पं० बापूदेव शास्त्रीजी से बहुत सेमैथिल ज्योतिषसिद्धान्त ग्रन्थों को पढ़ा करते थे पीछे महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदीजी से अनेक मैथिल ज्योतिष गणित सिद्धान्त पढ़ने लगे जिनमें अनेक विद्वान बड़े सुयोग्य हुए जिनमें पं० कृष्णदत्त झा, शशिपाल झा, वतहन झा, म०म० मुरलीधर झा, दीनानाथ मिश्र, सिद्धिनाथ झा, गेनालाल चौधरी, हरिनन्दन मिश्र, वबुआजी मिश्र, श्रीदेव चौधरी, श्रीनन्दन मिश्र तथा पं० दयानन्द झा ये लोग बड़े व्युत्पन्न हो गये हैं। इन लोगों ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं तथा अनेक छात्रों को विद्यादान देकर सुयोग्य वनाये हैं।

पं० कृष्णदत्त झा काशी में ही रहकर अपने गुरुजी के समय में तथा उनके परोक्ष में भी काशी में ज्योतिष पढ़ाते रहे तथा इनकी लिखी हुई अनेक पुस्तकें हैं जिनमें जातकक्रोड तथा फलित में प्रजापतिदास की पञ्चस्वरा पुस्तक बहुत प्रसिद्ध हैं। म०म० पं० मुरलीधर झाजी ने सिद्धान्त शिरोमणि पर मरीची तथा वासना वार्तिक टीका का कुछ अंश छपवाये। म०म० बापूदेव शास्त्री की त्रिकोणमिति का पुनः संपादन किया तथा बीजगणित का संपादन किया। काशी गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज के ज्योतिष के प्रधानाध्यापक थे। आपने अनेक छात्रों को पढ़या तथा बहुत कार्य किये। पं० दीनानाथ मिश्र, अपने गुरु द्विवेदीजी के साथ ही संस्कृत कालेज में ज्योतिष शास्त्र के द्वितीयाध्यापक थे। पं० गेनालाल चौधरी पहले स्वदेश में अपने घर पर हाबीभौआड़ नामक गाँव में छात्रों को पढ़ा कर व्युत्पन्न बनाये। पीछे १९२३ ई० में वे टीकमणि संस्कृत कालेज में पं० कृष्णदत्त झा का स्थान रिक्त होने पर वहीं

बुलाये गये और तब से लेकर करीब पचीस वर्ष वहीं काशीमें अध्यापन करते रहे। इनके बहुत अच्छे छात्र सब निकले जिनमें दामोदर मिश्र, दुर्गादत्त झा, दयानन्द झा, लेखक, गङ्गाधर मिश्र मुरलीधर ठाकुर, महीधर झा आदि बड़े योग्य लोग इस विद्या के हुए हैं तथा वर्त्तमानकाल में भी हैं।

पं० वतहन झा ने अपने गुरू महाराज की 'वास्तवचन्द्रश्रृङ्गोन्नति' नामक पुस्तक पर टीका लिखी है जो मुद्रित है। पं० हरिनन्दन मिश्र ने वराहमिहिर की योगयात्रा यात्रा नामक पुस्तक जो अलभ्य थी उसको प्राप्तकर छपवाई, एवं श्रीपति की रत्नावली तथा महेश ठाकुर के अतीचार-निर्णय को छपवाया। पं० बबुआ जी मिश्र ने ब्रह्मगुप्त के खण्डखाद्य करण को मक्कीभट्ट की टीका सहित तथा श्रीपति के सिद्धान्तशेखर के कियदंश को अपनी टीका सहित छपवाया। बहुत से अंश की टीका नहीं उपलब्ध होने पर स्वयं अपनी टीका तथा उपपत्ति देकर छपवाया यह उन्होंने बहुत बड़ा काम किया है। जैसे उनके गुरू महाराज प्राचीन ज्योतिष सिद्धान्तों का उद्धार कर गये हैं इसी प्रकार मिश्रजीने ब्रह्मगुप्त तथा श्रीपति के कृत्य को पुनरूज्जीवित किया है। पं० दयानन्द झा ने भाभ्रम, विमण्डलविचार नामक ग्रन्थ लिखे हैं तथा लीलावती पर दामोदर मिश्र की उपपत्ति थी उसका संपादन किया है। दामोदर मिश्र जी चौधरीजी के आद्य शिष्य थे।

स्वनामधन्य पं० गेनालाल चौधरीजी के छात्र गङ्गाधर मिश्र ने कमलाकर भट्ट के सिद्धान्ततत्त्वविवेक पर भाष्य लिखा है, वास्तव चन्द्रश्रृङ्गोन्नति तथा प्रतिभा बोधक पर टीका की है, नीलकण्ठी की टीका की है और अनेक पुस्तकों का मुद्रण कराया है। ये पहले प्रतापगढ़ संस्कृत कालेज में पश्चात् वैद्यनाथ धाम के बालानन्द संस्कृत कालेज में ज्योतिष के अध्यापक थे।

चौधरीजी के ही शिष्य श्री मुरलीधर ठक्कुर ने चापीयत्रिकोणमिति की टीका लिखी, चलन कलन चार अध्याय तक संस्कृत में लिखा तथा सिद्धान्त शिरोमणि की भी वृहत् टीका लिखी है जिसका केवल प्रथम भाग स्पष्टाधिकार तक प्रकाशित हुआ है। इन्होंने अनेक स्थान में अध्यापन किया, वर्त्तमान काल में मिथिला संस्कृत इन्स्टिट्यूट दरभङ्गा में हैं। चौधरीजी के छात्रों में एक प्रबन्ध लेखक भी हैं जिसने संस्कृत में एक त्रिकोणमिति पुस्तक लिखी है तथा भास्कराचार्य के बीजगणित में बहुत कुछ नवीन गणित परिशिष्ट के नाम से संमिलित किया है। म० म० सुधाकर द्विवेदीजी के चलन-कलन और चलराशिकलन तथा दीर्घवृत्त का पुनः संपादन किया है।

ज्योतिष के नवरत्न नाम से एक पुस्तक हिन्दी में लिखी है तथा गणित का इतिहास भी प्रकाशित होनेवाला है। बहुत शीघ्र आर्यभटीय की टीका भी प्रकाशित हो रही है।

पं० श्रीनन्दन मिश्र के शिष्यों में पट्ट शिष्य श्री सीताराम झाजी हैं। जिन्होंने ज्योतिष के अनेक ग्रन्थों पर टीका लिखी है। ये सब टीकायें अधिक फल ग्रन्थ पर हैं। गणित सिद्धान्त में सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघव और लीलीवती की उपपत्ति हैं। पं० श्री सीताराम झाजी वर्त्तमानकाल में गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज वाराणसी के प्राचीन विद्वानों की श्रेणी में हैं। पं० सिद्धिनाथ झा के शिष्यों में श्री कपिलेश्वर चौधरी हैं। इन्होंने भी अनेक ग्रन्थों पर टीका लिखी है जिनमें सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघव तथा जातक पारिजात की टीका प्रसिद्ध है। ये विहार प्रदेश में संस्कृत पाठशालाओं के निरीक्षक इन्सपेक्टर के रूप में कार्य कर रहे हैं।

मिथिला देश में अनेक ज्योतिर्विद हो गये हैं और अब भी हैं, मुझे जितना मालूम है उन्हीं की चर्चा मैंने की है। बहुत से विद्वानों की चर्चा छूट गई है। इधर हाल में प्राचीन आचार्य बटेश्वर के सिद्धान्त का केवल एक जिल्द छपा है जिस टीका के लेखक श्री मुकुन्द मिश्रजी हैं जो पं० दयानन्द झाजी के शिष्य हैं। यह बहुत अच्छी टीका छपी है। दुर्भाग्य से टीकाकार में दूसरे सज्जन का नाम छपा है।

पं० कृष्णदत्त झाजी के व्युत्पन्न छात्रों में चन्द्रशेखर झा ने व्यक्तवासना नाम से लीलावती की उपपत्ति तथा गोलप्रकाश के चापीयत्रिकोण गणित तथा गोलीय रेखा-गणित की टीका लिखी है तथा कृष्णदत्त झाजी के प्रसिद्ध छात्र राजवंशी झा का भी गोलीयचापीय रेखागणित पर मुद्रित पुस्तक है। उन्हींके एक और अच्छे छात्र अनुप-लाल झा थे जो पुपरी संस्कृत विद्यालय में ज्यौतिष पढ़ाते थे। उन्हीं के छात्रों में एक शिष्य श्री मधुकान्त झा हैं जो वाराणसी के श्यामा विद्यालय में ज्यौतिष शास्त्र के अध्यापक हैं। ऐसा मालूम पड़ता है कि पहले मिथिला देश में फलित ज्यौतिष का विशेष प्रचार था क्योंकि फलित ज्योतिष से लोगों का व्यावहारिक कार्य सिद्ध होता है किन्तु पं० जीवनाथ झा, नीलाम्बर झा ये दोनो भ्राता सिद्धान्त ज्योतिष में भी बहुत निपुण हुए इसलिये उनके समय में सिद्धान्त ज्योतिष का विशेष रूप से प्रचार हुआ, आजकल मिथिला देश में जितने अच्छे ज्योतिषी हैं सब महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदीजी की शिष्य परम्परा में आते हैं। इसलिये वर्त्तमानकाल में ज्योतिष सिद्धान्त

के मर्मज्ञ जितने मिथिला देश में हैं संभवत: अन्य देश में इससे कम ही होंगे क्योंकि अन्य लोगों की कृतियां देखने में नहीं आती। किन्तु आजकल सब लोंगों का ध्यान अङ्गरेजी शिक्षा में शिक्षित होकर चाकरी पाने की ओर है इसलिये संस्कृत का पठन पाठन नाम मात्र का है यद्यपि केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सरकार संस्कृत शिक्षा की उन्नति के लिये बहुत प्रयत्न कर रही है। जब संस्कृत का ही पठनपाठन नाममात्र का है तब ज्योतिष शास्त्र का पठनपाठन तत्सदृश ही है यही खेद की बात है।

इधर पटना जायसवाल इन्स्टिच्यूट के गवेषक डा० श्री जटाशङ्कर झा का एक लेख विहार में शिक्षा विषय पर छपा है जिससे स्पष्ट होता है कि भारत में अङ्गरेजी राज के प्रारम्भकाल से ही ज्योतिष शास्त्र के पठनपाठन की व्यवस्था मिथिला देश में थी। फलित तथा गणित सिद्धान्त दोनों विषयों के ग्रन्थ पठनपाठन में थे। फलित में रामाचार्य की मुहूर्त्त चिन्तामणि, वराहमिहिर का लघुजातक, वृहज्जातक, नीलकण्ठ की नीलकण्ठी, श्रीपति की जातकपद्धति तथा केशव की केशवी इतने ग्रन्थ पढ़ाये जाते थे। गणित में भास्कराचार्य की लीलावती और बीजगणित, सिद्धान्त में भास्कराचार्य की सिद्धान्तशिरोमणि, सूर्य सिद्धान्त, कमलाकर का सिद्धान्ततत्वविवेक और गणेश का ग्रहलाघव इतने ग्रन्थ पाठ्य ग्रन्थ थे।

यद्यपि ज्यौतिष में अनेक आचार्य हो गये हैं जैसे आर्यभट्ट, लल्ल, ब्रह्मगुप्त, श्रीपति आदि तथापि भास्कराचार्य का ग्रन्थ ही पठनपाठन में है और ऐसा कहा जाता है कि भास्कराचार्य के ग्रन्थ में पारङ्गत व्यक्ति ज्योतिषशास्त्र के जिस किसी ग्रन्थ को समझने का अधिकारी हो जाता है। इसलिये भास्कराचार्य की शिरोमणि अत्यन्त लोकप्रिय ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ अनेकवार मुद्रित हुआ है तथा इसपर टीका टिप्पणी हो रही है। यद्यपि ये ग्रन्थ प्राचीन हैं फिर भी इन पर टीका टिप्पणियाँ नवीन गणित रीति से हो रही हैं अनेक नवीन गणित ग्रन्थ भी वन गये हैं जो पठनपाठन में ज्यौतिष शास्त्र में आ गये हैं जैसे, वास्तव चन्द्रश्रृङ्गोन्नति, भूभ्रमभाभ्रम, प्रतिभाबोधक, द्युचरचार, दीर्घवृत्तलक्षण, ग्रहणकरण, चलन-कलन, चलराशिकलन, समीकरणमीमांसा इत्यादि। इन सब ग्रन्थों के निर्माता महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदीजी हो गये हैं। म० म० सुधाकर द्विवेदीजो के निर्मित ग्रन्थ तथा उनकी टीकाओं को समझना ही ज्यौतिषशास्त्र में पूर्ण नैपुण्य है। मिथिला देश के आधुनिक विद्वान् इन सब ग्रन्थों के जानकार हैं तथा इन ग्रन्थों पर टीका टिप्पणियाँ भी उनलोगों ने लिखी है इसजिये यह कह सकते हैं कि मिथिला में ज्योतिष शास्त्र जाग्रत है।

बहुतसे लोग ज्योतिषशास्त्र को फलित ज्योतिष ही समझते हैं तथा मिथिला से भिन्न प्रान्तों में फलित ज्योतिष का ही विशेष प्रभाव है किन्तु मिथिला में गणित तथा ज्योतिष सिद्धान्त की ही विशेष रूप से चर्चा है फलित का अल्प, केवल मुहूर्त्त इत्यादि देखने में फलित ज्योतिष का प्रचार है। महामहोपाध्याय बापूदेव शास्त्री जी की त्रिकोणमिति भी पाठ्यग्रन्थों में है। सिद्धान्तशिरोमणि को शुद्ध रूप से उन्होंने ही छपवाया। महामहोपाध्याय गोकुलनाथ उपाध्यय जो सम्भवतः सत्रहवीं शताब्दी में हुए हैं वे बहुत बड़े दार्शनिक थे। दर्शनशास्त्र में उनकी कृतियाँ हैं किन्तु वे गणितज्ञ भी थे। कुण्डसाधनविधि नामक पुस्तक में उन्होंने अपने गणितप्रपञ्च को दिखाया है। उनकी एक प्रसिद्ध शिवस्तुति है जिसके अनेक श्लोकों में गणित ज्योतिष के सिद्धान्तों को उन्होंने कहा है। जैसे :-

प्रवहपवनवेगघट्टितोऽपि स्खलति न यज्जगदण्डपिण्डभारः।
लघुगुरुतुलना तुलाप्रकाण्डद्रसिमगुणः सभवद्गुणत्रयस्य।
न धरणि सलिलानला न वायुर्नखमतएव न खानि नापिवर्ष्म।
न समयककुभौ न चित्र चित्तं पुरुषपुरन्दर पुरुष स्तवामि॥
अपरिमितविभागभूमिरेकस्त्वमसि ततो जगदण्डविन्दुरासीत्।
इतिभुवनभवैकधुर्यजाने दशककुभो गणितक्रमेण सिद्धाः॥
भ्रमयसि नवधा खमण्डलानि द्रढयसि सप्तपुटानि भूतधात्र्या।
उपदिशसि च षडगतीर्ग्रहाणां ध्रूवमसि तद्ध्रूवयोरपि ध्रूवस्त्वम्॥
न धरणिरूपरि प्रयाति नाधः पतति नचलवनं न वभ्रमीति।
न च दिवि वसति स्वशक्तियोगादपि तु भवानचलास्थिरत्वहेतुः॥

इस प्रकार ज्योतिषशास्त्र की विशेषकर गणित सिद्धान्त ज्योतिष की चर्चा मिथिला में सदा थी यह प्रमाणित होता है।

महातीचार

इसके अतिरिक्त मिथिला देश में महातिचार की बहुत मान्यता है गुरू जिस राशि में महातिचारी रहते हैं उस वर्ष में कोई शुभ कर्म विवाह, उपनयन, देवप्रतिष्ठा, एकादशी व्रत यज्ञादि नहीं किया जाता है। इस महातिचार का विचार भी ज्योतिष सिद्धान्तमूलक है इस विषय में सबसे प्रमाणित ग्रन्थ म० म० महेश ठाकुर का अतीचार निर्णय माना जाता है अतएव म० म० महेश ठाकुर भी ज्यौतिष सिद्धान्ताभिज्ञ थे।

पं० नीलाम्बर झा ने अपने गोलप्रकाश में धूपघड़ी बनाने का प्रकार लिखा है अर्थात् छाया ही से प्रचलित घड़ी की तरह समय ज्ञान किस तरह होता है। यह एक नवीन विषय उस ग्रन्थ में है। काशी राजकीय संस्कृत कालेज भवन के उत्तर भागमें एक धूपघड़ी स्थापित है जिससे समय का ज्ञान होता है। कहा जाता है कि म० म० बापूदेव शास्त्रीजी ने इसका निर्माण करवाया था।

फलित ज्योतिष

फलित ज्योतिष के विषय में भी बहुतसी बातें सुनने में आती है। एक बड़े आदमी बन्सी से मछली पकड़ने के लिये जारहे थे तो उन्होंने अपने दरबारी ज्योतिषी से पूछा की आज कौनसी मछली बझेगी तो ज्योतिषी ने उत्तर दिया कि आज तित्तिर बझेगा। सबको आश्चर्य लगा कि पानी के भीतर में तित्तिर कहाँ से आवेगा। किन्तु वास्तव में जब वन्सी जोर से उलटी खीची गई तो भूमिस्थ तित्तिर ही उसमें बझा इससे उक्त ज्योतिषी की बड़ी ख्याति हुई।

इसी प्रकार यह भी सुना जाता है कि जिस महाराज ने अपनी राजधानी दरभङ्गा में बनाने का निर्णय किये उसका कारण यही हुआ कि एक ज्योतिषी ने उस स्थान को अपूर्व बतलाया। इस प्रकार फलित ज्योतिष के बारे में बहुतसी किंवदन्तियाँ हैं। किन्तु इतनी बात तो मिथिला देश में अब भी देखी जाती है कि शुद्ध समय में ही विवाहादि यज्ञ होते हैं। अच्छे मुहूर्त में ही उपनयन संस्कार मुण्डन, कर्णवेध, विवाहादि कृत्य होते हैं। यात्रा विशेष कर द्विरागमन तथा स्त्रियों की यात्रा अच्छे दिन लग्न में ही होती हैं। इस अच्छापन का विचार पञ्चाङ्गों के द्वारा मूहूर्त ग्रन्थों से किया जाता है, इस तरह फलित ज्योतिष के सहारे से ही ये सब दैनन्दिन कार्य होते हैं। आश्चर्य का विषय यह है कि विवाह के निर्णय में कुण्डली का विचार मिथिला में केवल धनीमानी लोगों में ही होता है। शास्त्र में लिखा है कि जन्मलग्न तो केवल शरीर है, चन्द्रमन्दिर मन है। सौहृद्य शरीर का नहीं अपितु मन का होता है इसलिये चन्द्रलग्न का भी विचार करना चाहिये।

मिथिला देश में साधारण रूप से वरवधू की कुण्डली का विचार नहीं होने में दो कारण मुख्य मालूम पड़ते हैं। प्रथम तो यह कि सबकी जन्मकुण्डली बनती ही नहीं, द्वितीय विवाह, विवाह सभा में इतनी त्वरा में निश्चित किया जाता है कि कुण्डली मिलान की चर्चा भी नहीं होती।

जहाँ इस कुण्डली मिलान की प्राथमिकता है वहाँ के लोग भी इस प्रथा से ऊब गये हैं। चूँकि रीति प्रचलित है इसीलिये इसका अनुगमन करते हैं। कारण यह है कि आजकल के संसार में सुन्दर सुयोग्य वर प्राप्तकरना ही कठिन है उसपर भी अन्य वाधायें हों तो बहुत कष्ट का अनुभव होता है।

इस प्रकार वर्त्तमान काल में भी ज्योतिष के फलित, गणित, सिद्धान्त तीनों विभाग का पठन पाठन तथा व्यवहार में उपयोग है। आगे की स्थिति ईश्वराधीन है। वास्तव में ज्योतिष शास्त्र को जीवित रखने के लिये वेधशाला की आवश्यकता है परञ्च प्राचीन रीति की वेधशाला तो मिथिला में दृष्टिगोचर नहीं है और न होने की कोई संभावना ही है तथापि श्री भगवान् की इच्छा सर्वोपरि है।

———